श्रीमद्भागवत रसिक कुटुंब

UG-11.15 - तृतीय सोपान (अर्थ)

श्रीभगवानुवाच

जितेन्द्रियस्य युक्तस्य, जितश्वासस्य योगिनः ।

मयि धारयतश्चेत, उपतिष्ठन्ति सिद्धयः ॥ 1॥

भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं- प्रिय उद्धव! जब साधक इन्द्रिय, प्राण और मनको अपने वश में करके अपना चित्त मुझमें लगाने लगता है, मेरी धारणा करने लगता है, तब उसके सामने बहुत-सी सिद्धियाँ उपस्थित होती हैं ।।1।।

उद्धव उवाच

कया धारणया कास्वित् , कथं(व्)स्वित् सिद्धिरच्युत ।

कति वा सिद्धयो ब्रूहि, योगिनां(म्) सिद्धिदो भवान् ॥ 2॥

उद्धवजी ने कहा— अच्युत! कौन-सी धारणा करने से किस प्रकार कौन-सी सिद्धि प्राप्त होती है और उनकी संख्या कितनी है, आप ही योगियों को सिद्धियाँ देते हैं, अतः आप इनका वर्णन कीजिये ।।2।।

श्रीभगवानुवाच

सिद्धयोऽष्टादश प्रोक्ता, धारणायोगपारगैः ।

तासामष्टौ मत्प्रधाना, दशैव गुणहेतवः ॥ 3॥

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा- प्रिय उद्धव! धारणायोग के पारगामी योगियों ने अठारह प्रकार की सिद्धियाँ बतलायी हैं। उनमें आठ सिद्धियाँ तो प्रधानरूप से मुझमें ही रहती हैं और दूसरों में न्यून; तथा दस सत्त्वगुण के विकास से भी मिल जाती हैं ।।3।।

अणिमा महिमा मूर्तेर्- लघिमा प्राप्तिरिन्द्रियैः ।

प्राकाम्यं(म्) श्रुतदृष्टेषु, शक्तिप्रेरणमीशिता ॥ 4॥

उनमें तीन सिद्धियाँ तो शरीर की हैं—'अणिमा', 'महिमा' और 'लघिमा'। इन्द्रियों की एक सिद्धि है—'प्राप्ति'। लौकिक और पारलौकिक पदार्थों का इच्छानुसार अनुभव करनेवाली सिद्धि 'प्राकाम्य' है। माया और उसके कार्यों को इच्छानुसार संचालित करना 'ईशिता' नाम की सिद्धि है ।।4।।

गुणेष्वसं(ङ्)गो वशिता, यत्कामस्तदवस्यति ।

एता मे सिद्धयः(स्) सौम्य, अष्टावौत्पत्तिका मताः ॥ 5॥

विषयों में रहकर भी उनमें आसक्त न होना 'वशिता' है और जिस-जिस सुख की कामना करे, उसकी सीमातक पहुँच जाना 'कामावसायिता' नाम की आठवीं सिद्धि है। ये आठों सिद्धियाँ मुझमें स्वभाव से ही रहती हैं और जिन्हें मैं देता हूँ, उन्हींको अंशतः प्राप्त होती हैं ।।5।।

अनूर्मिमत्त्वं(न्) देहेऽस्मिन्, दूरश्रवणदर्शनम् ।

मनोजवः(ख्) कामरूपं(म्), परकायप्रवेशनम् ॥ 6॥

इनके अतिरिक्त और भी कई सिद्धियाँ हैं। शरीर में भूख-प्यास आदि वेगों का न होना, बहुत दूर की वस्तु देख लेना और बहुत दूर की बात सुन लेना, मन के साथ ही शरीर का उस स्थानपर पहुँच जाना, जो इच्छा हो वही रूप बना लेना; दूसरे शरीर में प्रवेश करना, जब इच्छा हो तभी शरीर छोड़ना, अप्सराओं के साथ होनेवाली देवक्रीड़ा का दर्शन, संकल्प की सिद्धि, सब जगह सबके द्वारा बिना ननु-नच के आज्ञापालन - ये दस सिद्धियाँ सत्त्वगुण के विशेष विकास से होती हैं ।।6।।

स्वच्छन्दमृत्युर्देवानां(म्), सहक्रीडानुदर्शनम् ।

यथास(ङ्)कल्पसं(व्)सिद्धि- राज्ञाप्रतिहतागतिः ॥ 7॥

भूत, भविष्य और वर्तमान की बात जान लेना; शीत-उष्ण, सुख-दुःख और राग-द्वेष आदि द्वन्द्वों के वश में न होना, दूसरे के मन आदि की बात जान लेना; अग्नि, सूर्य, जल, विष आदि की शक्ति को स्तम्भित कर देना और किसी से भी पराजित न होना – ये पाँच सिद्धियाँ भी योगियों को प्राप्त होती हैं ।।7।।

त्रिकालज्ञत्वमद्वन्द्वं(म्), परचित्ताद्यभिज्ञता ।

अग्न्यर्काम्बुविषादीनां(म्), प्रतिष्टम्भोऽपराजयः ॥ 8॥

प्रिय उद्धव! योग-धारणा करने से जो सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं, उनका मैंने नाम निर्देश के साथ वर्णन कर दिया। अब किस धारणा से कौन-सी सिद्धि कैसे प्राप्त होती है, यह बतलाता हूँ, सुनो ।।8।।

एताश्चोद्देशतः(फ्) प्रोक्ता, योगधारणसिद्धयः ।

यया धारणया या स्याद् , यथा वा स्यान्निबोध मे ॥ 9॥

प्रिय उद्धव! पंचभूतों की सूक्ष्मतम मात्राएँ मेरा ही शरीर है। जो साधक केवल मेरे उसी शरीर की उपासना करता है और अपने मन को तदाकार बनाकर उसीमें लगा देता है अर्थात् मेरे तन्मात्रात्मक शरीर के अतिरिक्त और किसी भी वस्तु का चिन्तन नहीं करता, उसे 'अणिमा' नाम की सिद्धि अर्थात् पत्थर की चट्टान आदि में भी प्रवेश करने की शक्ति–अणुता प्राप्त हो जाती है ।।9।।

भूतसूक्ष्मात्मनि मयि,तन्मात्रं(न्) धारयेन्मनः ।

अणिमानमवाप्नोति, तन्मात्रोपासको मम ॥ 10॥

प्रिय उद्धव! पंचभूतों की सूक्ष्मतम मात्राएँ मेरा ही शरीर है। जो साधक केवल मेरे उसी शरीर की उपासना करता है और अपने मन को तदाकार बनाकर उसीमें लगा देता है अर्थात् मेरे तन्मात्रात्मक शरीर के अतिरिक्त और किसी भी वस्तु का चिन्तन नहीं करता, उसे 'अणिमा' नाम की सिद्धि अर्थात् पत्थर की चट्टान आदि में भी प्रवेश करने की शक्ति–अणुता प्राप्त हो जाती है ।।10।।

महत्यात्मन्मयि परे, यथासं(व्)स्थं(म्) मनो दधत् ।

महिमानमवाप्नोति,भूतानां(ञ्) च पृथक् पृथक् ॥ 11॥

महत्तत्त्व के रूप में भी मैं ही प्रकाशित हो रहा हूँ और उस रूप में समस्त व्यावहारिक ज्ञानों का केन्द्र हूँ। जो मेरे उस रूप में अपने मन को महत्तत्त्वाकार करके तन्मय कर देता है, उसे 'महिमा' नाम की सिद्धि प्राप्त होती है, और इसी प्रकार आकाशादि पंचभूतों में—जो मेरे ही शरीर हैं - अलग-अलग मन लगाने से उन-उनकी महत्ता प्राप्त हो जाती है, यह भी 'महिमा' सिद्धिके ही अन्तर्गत है ।।11।।

परमाणुमये चित्तं(म्),भूतानां(म्) मयि रं(ञ्)जयन् ।

कालसूक्ष्मार्थतां(म्) योगी, लघिमानमवाप्नुयात् ॥12॥

जो योगी वायु आदि चार भूतों के परमाणुओं को मेरा ही रूप समझकर चित्त को तदाकार कर देता है, उसे 'लघिमा' सिद्धि प्राप्त हो जाती है— उसे परमाणुरूप काल के समान सूक्ष्म वस्तु बनने का सामर्थ्य प्राप्त हो जाता है ।।12।।

धारयन् मय्यहं(न्)तत्त्वे, मनो वैकारिकेऽखिलम् ।

सर्वेन्द्रियाणामात्मत्वं(म्), प्राप्तिं(म्) प्राप्नोति मन्मनाः ॥ 13॥

जो सात्त्विक अहंकार को मेरा स्वरूप समझकर मेरे उसी रूप में चित्त की धारणा करता है, वह समस्त इन्द्रियों का अधिष्ठाता हो जाता है। मेरा चिन्तन करनेवाला भक्त इसप्रकार 'प्राप्ति' नाम की सिद्धि प्राप्त कर लेता है ।।13।।

महत्यात्मनि यः(स्) सूत्रे, धारयेन्मयि मानसम् ।

प्राकाम्यं(म्) पारमेष्ठ्यं(म्) मे, विन्दतेऽव्यक्तजन्मनः ॥ 14॥

जो पुरुष मुझ महत्तत्त्वाभिमानी सूत्रात्मा में अपना चित्त स्थिर करता है, उसे मुझ अव्यक्तजन्मा (सूत्रात्मा) की 'प्राकाम्य' नाम की सिद्धि प्राप्त होती है- जिससे इच्छानुसार सभी भोग प्राप्त हो जाते हैं ।।14।।

विष्णौ त्र्यधीश्वरे चित्तं(न्), धारयेत् कालविग्रहे ।

स ईशित्वमवाप्नोति, क्षेत्रक्षेत्रज्ञचोदनाम् ॥ 15॥

जो त्रिगुणमयी माया के स्वामी मेरे काल-स्वरूप विश्वरूप की धारणा करता है, वह शरीरों और जीवों को अपने इच्छानुसार प्रेरित करने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है। इस सिद्धि का नाम 'ईशित्व' है ।।15।।

नारायणे तुरीयाख्ये, भगवच्छब्दशब्दिते ।

मनो मय्यादधद् योगी, मद्धर्मा वशितामियात् ॥ 16

जो योगी मेरे नारायण-स्वरूप में- जिसे तुरीय और भगवान् भी कहते हैं — मन को लगा देता है, मेरे स्वाभाविक गुण उसमें प्रकट होने लगते हैं और उसे 'वशिता' नाम की सिद्धि प्राप्त हो जाती है ।।16।।

निर्गुणे ब्रह्मणि मयि, धारयन् विशदं(म्) मनः ।

परमानन्दमाप्नोति, यत्र कामोऽवसीयते ॥ 17॥

निर्गुण ब्रह्म भी मैं ही हूँ। जो अपना निर्मल मन मेरे इस ब्रह्मस्वरूप में स्थित कर लेता है, उसे परमानन्द-स्वरूपिणी 'कामावसायिता' नाम की सिद्धि प्राप्त होती है। इसके मिलनेपर उसकी सारी कामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं, समाप्त हो जाती हैं ।।17।।

श्वेतद्वीपपतौ चित्तं(म्), शुद्धे धर्ममये मयि ।

धारयञ्छ्वेततां(म्) याति, षड्ऊर्मिरहितो नरः ॥ 18॥

प्रिय उद्धव! मेरा वह रूप, जो श्वेतद्वीप का स्वामी है, अत्यन्त शुद्ध और धर्ममय है। जो उसकी धारणा करता है, वह भूख-प्यास, जन्म-मृत्यु और शोक-मोह–इन छः ऊर्मियों से मुक्त हो जाता है और उसे शुद्ध स्वरूप की प्राप्ति होती है ।।18।।

मय्याकाशात्मनि प्राणे, मनसा घोषमुद्वहन् ।

तत्रोपलब्धा भूतानां(म्) , हं(व्)सो वाचः(श्) शृणोत्यसौ ॥ 19॥

मैं ही समष्टि-प्राणरूप आकाशात्मा हूँ। जो मेरे इस स्वरूप में मन के द्वारा अनाहत नाद का चिन्तन करता है, वह 'दूरश्रवण' नाम की सिद्धि से सम्पन्न हो जाता है और आकाश में उपलब्ध होनेवाली विविध प्राणियों की बोली सुन-समझ सकता है ।।19।।

चक्षुस्त्वष्टरि सं(य्)योज्य, त्वष्टारमपि चक्षुषि ।

मां(न्) तत्र मनसा ध्यायन्, विश्वं(म्) पश्यति सूक्ष्मदृक् ॥20

जो योगी नेत्रों को सूर्य में और सूर्य को नेत्रों में संयुक्त कर देता है और दोनों के संयोग में मन-ही-मन मेरा ध्यान करता है, उसकी दृष्टि सूक्ष्म हो जाती है, उसे 'दूरदर्शन' नाम की सिद्धि प्राप्त होती है और वह सारे संसार को देख सकता है ।।20।।

मनो मयि सुसं(य्)योज्य , देहं(न्) तदनु वायुना ।

मद्धारणानुभावेन, तत्रात्मा यत्र वै मनः ॥ 21॥

मन और शरीर को प्राणवायु के सहित मेरे साथ संयुक्त कर दे और मेरी धारणा करे तो इससे 'मनोजव' नाम की सिद्धि प्राप्त हो जाती है। इसके प्रभाव से वह योगी जहाँ भी जाने का संकल्प करता है, वहीं उसका शरीर उसी क्षण पहुँच जाता है ।।21।।

यदा मन उपादाय , यद् यद् रूपं(म्) बुभूषति ।

तत्तद् भवेन्मनोरूपं(म्), मद्योगबलमाश्रयः ॥ 22॥

जिस समय योगी मन को उपादान-कारण बनाकर किसी देवता आदि का रूप धारण करना चाहता है तो वह अपने मन के अनुकूल वैसा ही रूप धारण कर लेता है। इसका कारण यह है कि उसने अपने चित्त को मेरे साथ जोड़ दिया है ।।22।।

परकायं(म्) विशन् सिद्ध, आत्मानं(न्) तत्र भावयेत् ।

पिण्डं(म्) हित्वा विशेत् प्राणो, वायुभूतः(ष्) षडङ्घ्रिवत् ॥ 23॥

जो योगी दूसरे शरीर में प्रवेश करना चाहे, वह ऐसी भावना करे कि मैं उसी शरीर में हूँ। ऐसा करने से उसका प्राण वायुरूप धारण कर लेता है और वह एक फूल से दूसरे फूलपर जानेवाले भौरे के समान अपना शरीर छोड़कर दूसरे शरीर में प्रवेश कर जाता है ।।23।।

पाष्ण्यार्ऽऽपीड्य गुदं(म्) प्राणं(म्), हृदुरः(ख्)कण्ठमूर्धसु ।

आरोप्य ब्रह्मरन्ध्रेण, ब्रह्म नीत्वोत्सृजेत्तनुम् ॥ 24॥

योगी को यदि शरीर का परित्याग करना हो तो एड़ी से गुदाद्वार को दबाकर प्राणवायु को क्रमशः हृदय, वक्षःस्थल, कण्ठ और मस्तक में ले जाय । फिर ब्रह्मरन्ध्र के द्वारा उसे ब्रह्म में लीन करके शरीर का परित्याग कर दे ।।24।।

विहरिष्यन् सुराक्रीडे, मत्स्थं(म्) सत्त्वं(म्) विभावयेत् ।

विमानेनोपतिष्ठन्ति, सत्त्ववृत्तीः(स्) सुरस्त्रियः ॥ 25॥

यदि उसे देवताओं के विहारस्थलों में क्रीड़ा करने की इच्छा हो, तो मेरे शुद्ध सत्त्वमय स्वरूप की भावना करे। ऐसा करनेसे सत्त्वगुणकी अंशस्वरूपा सुर-सुन्दरियाँ विमानपर चढ़कर उसके पास पहुँच जाती हैं ।।25।।

यथा सं(ङ्)कल्पयेद् बुद्ध्या , यदा वा मत्परः(फ्) पुमान् ।

मयि सत्ये मनो युं(ञ्)जं(व्)स्- तथा तत् समुपाश्नुते ॥ 26॥

जिस पुरुष ने मेरे सत्यसंकल्पस्वरूप में अपना चित्त स्थिर कर दिया है, उसीके ध्यान में संलग्न है, वह अपने मन से जिस समय जैसा संकल्प करता है, उसी समय उसका वह संकल्प सिद्ध हो जाता है। ।।26।।

यो वै मद्भावमापन्न, ईशितुर्वशितुः(फ्) पुमान् ।

कुतश्चिन्न विहन्येत, तस्य चाज्ञा यथा मम ॥ 27॥

मैं 'ईशित्व' और 'वशित्व' – इन दोनों सिद्धियों का स्वामी हूँ; इसलिये कभी कोई मेरी आज्ञा टाल नहीं सकता। जो मेरे उस रूप का चिन्तन करके उसी भाव से युक्त हो जाता है, मेरे समान उसकी आज्ञा को भी कोई टाल नहीं सकता । ।।27।।

मद्भक्त्या शुद्धसत्त्वस्य, योगिनो धारणाविदः ।

तस्य त्रैकालिकी बुद्धिर्- जन्ममृत्यूपबृं(व्)हिता ॥ 28॥

जिस योगी का चित्त मेरी धारणा करते-करते मेरी भक्ति के प्रभाव से शुद्ध हो गया है, उसकी बुद्धि जन्म-मृत्यु आदि अदृष्ट विषयों को भी जान लेती है। और तो क्या — भूत, भविष्य और वर्तमान की सभी बातें उसे मालूम हो जाती हैं ।।28।।

अग्न्यादिभिर्न हन्येत, मुनेर्योगमयं(म्) वपुः ।

मद्योगश्रान्तचित्तस्य, यादसामुदकं(म्) यथा ॥ 29॥

जैसे जल के द्वारा जल में रहनेवाले प्राणियों का नाश नहीं होता, वैसे ही जिस योगी ने अपना चित्त मुझमें लगाकर शिथिल कर दिया है, उसके योगमय शरीर को अग्नि, जल आदि कोई भी पदार्थ नष्ट नहीं कर सकते ।।29।।

मद्विभूतीरभिध्यायन्, श्रीवत्सास्त्रविभूषिताः ।

ध्वजातपत्रव्यजनैः(स्), स भवेदपराजितः ॥ 30॥

जो पुरुष श्रीवत्स आदि चिह्न और शंख-गदा-चक्र-पद्म आदि आयुधों से विभूषित तथा ध्वजा-छत्र- चँवर आदि से सम्पन्न मेरे अवतारों का ध्यान करता है, वह अजेय हो जाता है ।।31।।

उपासकस्य मामेवं(म्), योगधारणया मुनेः ।

सिद्धयः(फ्) पूर्वकथिता, उपतिष्ठन्त्यशेषतः ॥ 31॥

इस प्रकार जो विचारशील पुरुष मेरी उपासना करता है और योगधारणा के द्वारा मेरा चिन्तन करता है, उसे वे सभी सिद्धियाँ पूर्णतः प्राप्त हो जाती हैं, जिनका वर्णन मैंने किया है ।।31।।

जितेन्द्रियस्य दान्तस्य, जितश्वासात्मनो मुनेः ।

मद्धारणां(न्) धारयतः(ख्), का सा सिद्धिः(स्) सुदुर्लभा ॥ 32॥

प्यारे उद्धव! जिसने अपने प्राण, मन और इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली है, जो संयमी है और मेरे ही स्वरूप की धारणा कर रहा है, उसके लिये ऐसी कोई भी सिद्धि नहीं, जो दुर्लभ हो। उसे तो सभी सिद्धियाँ प्राप्त ही हैं ।।32।।

अन्तरायान् वदन्त्येता, युं(ञ्)जतो योगमुत्तमम् ।

मया सम्पद्यमानस्य, कालक्षपणहेतवः ॥ 33॥

परन्तु श्रेष्ठ पुरुष कहते हैं कि जो लोग भक्तियोग अथवा ज्ञानयोगादि उत्तम योगों का अभ्यास कर रहे हैं, जो मुझसे एक हो रहे हैं उनके लिये इन सिद्धियों का प्राप्त होना एक विघ्न ही है; क्योंकि इनके कारण व्यर्थ ही उनके समय का दुरुपयोग होता है ।।33।।

जन्मौषधितपोमन्त्रैर्- यावतीरिह सिद्धयः ।

योगेनाप्नोति ताः(स्) सर्वा, नान्यैर्योगगतिं(म्) व्रजेत् ॥ 34॥

जगत् में जन्म, ओषधि, तपस्या और मन्त्रादि के द्वारा जितनी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं, वे सभी योग के द्वारा मिल जाती हैं; परन्तु योग की अन्तिम सीमा—मेरे सारूप्य, सालोक्य आदि की प्राप्ति बिना मुझमें चित्त लगाये किसी भी साधन से नहीं प्राप्त हो सकती ।।34।।

सर्वासामपि सिद्धीनां(म्), हेतुः(फ्) पतिरहं(म्) प्रभुः ।

अहं(म्) योगस्य सां(ङ्)ख्यस्य, धर्मस्य ब्रह्मवादिनाम् ॥ 35॥

ब्रह्मवादियों ने बहुत से साधन बतलाये हैं—योग, सांख्य और धर्म आदि। उनका एवं समस्त सिद्धियों का एकमात्र मैं ही हेतु, स्वामी और प्रभु हूँ ।।35।।

अहमात्माऽऽन्तरो बाह्योऽ - नावृतः(स्) सर्वदेहिनाम् ।

यथा भूतानि भूतेषु, बहिरन्तः(स्) स्वयं(न्) तथा ॥ 36॥

जैसे स्थूल पंचभूतों में बाहर, भीतर – सर्वत्र सूक्ष्म पंच महाभूत ही हैं, सूक्ष्म भूतों के अतिरिक्त स्थूल भूतों की कोई सत्ता ही नहीं है, वैसे ही मैं समस्त प्राणियों के भीतर द्रष्टारूप से और बाहर दृश्यरूप से स्थित हूँ। मुझमें बाहर भीतर का भेद भी नहीं है; क्योंकि मैं निरावरण, एक–अद्वितीय आत्मा हूँ ।।36।।

इति श्रीमद्भागवते महापुराणे पारमहं(व्)स्यां(म्)

सं(व्)हितायामेकादशस्कन्धे पञ्चदशोऽध्यायः ॥ 15॥

YouTube Full video link

https://youtu.be/nVC_NMN77B8